(M.A Hindu Studies)

(एम.ए हिन्दू अध्ययन)

Programme Outcomes (POs), Programme Specific Outcomes (PSOs), Course Outcomes (COs)

Programme Outcomes (POs) for M.A (Hindu Studies)

At the end of this 2 years Master Degree programme in M.A Hindu Studies, students will able to-

द्विवर्षीय हिन्दू अध्ययन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अन्त में, छात्र-

PO1: Critical Close Reading- read critically the prescribed texts and understand its broader implications. This includes:

- read closely in a variety of forms, styles, structures, and modes.
- use various interpretative techniques.

PO1: समीक्षात्मक गहन अध्ययन- निर्धारित ग्रंथों को गंभीर रूप से पढ़ने की क्षमता और इसके व्यापक निहितार्थों को समझने की क्षमता। इसमें अंतर्निहित है:

- विभिन्न रूपों, शैलियों, संरचनाओं का गंभीर अध्ययन।
- विभिन्न व्याख्यात्मक तकनीकों का प्रयोग।

PO2: Critical Thinking -An ability to think critically on various issues and subject matters and relate the same with real life situations. This includes the ability to:

• synthesize and integrate knowledge.
• practice and develop argumentative skills.
• in-depth study of the subject matter.

PO2: आलोचनात्मक चिन्तन - विभिन्न मुद्दों और विषयों पर गंभीर रूप से चिन्तन और वास्तविक जीवन की स्थितियों से संबंधित करने की क्षमता। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं-

- ज्ञान का संश्लेषण और एकीकरण।
- तर्क कौशल का अभ्यास और विकास ।
- विषय वस्तु का गहन अध्ययन।

PO3: Integration of Knowledge-Demonstrate detailed knowledge in one or more disciplines and the ability to integrate knowledge across disciplinary boundaries. This includes the ability to:

- study the current state of knowledge.
- multi-disciplinary learning ability.
- show familiarity with works from other disciplines.

PO3: ज्ञान का एकीकरण- यह एक या एक से अधिक विषयों में विस्तृत ज्ञान और अनुशासनात्मक सीमाओं के ज्ञान को एकीकृत करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं-

- ज्ञान की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करें।
- बहु-विषयक सीखने की क्षमता।
- अन्य विषयों के कार्यों से परिचित होना।

PO4: Communication Skill - Demonstrate the ability to extract and convey information accurately in a variety of formats. This includes: An ability to adjust writing style appropriately to the content, the context, and nature of the subject.

- communicate both in writing & orally.
- read & write analytically.
- analytical skills to all situations.

PO4: सम्प्रेषण कौशल - यह विभिन्न स्वरूपों में जानकारी को सटीक रूप से निकालने और संप्रेषित करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें विषय की सामग्री, संदर्भ और प्रकृति के लिए लेखन शैली को उचित रूप से समायोजित करने की क्षमता शामिल हैं।

- लिखित और मौखिक उभय विध संवाद।
- स्पष्ट रूप से और प्रभावी ढंग से लिखना, लेखन को अनुकूलित करना
- सभी स्थितियों के लिए विश्लेषणात्मक कौशल।

PO5: Research Aptitude - Development of a spirit of critical and scholarly enquiry for the subject. This includes:

- identify and evaluate appropriate research sources.
- incorporate sources into documented academic writing.
- formulate original arguments in response to those sources.
- apply appropriate research methodologies to specific problems.

PO5: अनुसंधान अभिक्षमता - किसी भी विषय के लिए आलोचनात्मक और विद्वतापूर्ण अन्वेषण की भावना का विकास। इसमें शामिल है-

- उपयुक्त अनुसंधान स्रोतों की पहचान और मूल्यांकन करना।
- प्रलेखित अकादमिक लेखन में स्रोतों को शामिल करना।
- उन स्रोतों के प्रत्युत्तर में मूल तर्क तैयार करना।
- विशिष्ट समस्याओं के लिए उपयुक्त शोध पद्धतियों को लागू करना।

PO6: Role as a Global Citizen- A critical understanding about the ways of the world and realization of one's role within communities to effect change. This includes the ability to:

- espect other feelings & thoughts irrespection of place.
- Demonstrate interconnectedness among people, societies & enviornment arond the globe.

PO6: एक वैश्विक नागरिक के रूप में भूमिका- वैश्विक प्रणालियों का आलोचनात्मक बोध और सम्बन्धित परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए समुदायों में अपनी भूमिका का निर्वहण। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं:

- स्थान आदि की परवाह किये बिना दूसरों की भावनाओं और विचारों का सम्मान।
- विश्व के लोगों, समाजों और पपर्यावरण के बीच परस्पर जुडाव का प्रदर्शन ।

PO7: Understanding of Indian Knowledge Tradition - discussion of classical knowledge promoted by Rishis and Acharyas in India. This includes:

• introduction to India's holistic thinking tradition.
• knowledge of Indian sciences.
• understanding of Hindu way of life, Hindu culture and Hindu thoughts.

- A gradual introduction to the arts developed in India.

PO7:भारतीय ज्ञान परम्परा का अवबोध-भारत में ऋषियों एवं आचार्यों द्वारा प्रवर्तित शास्त्रीय ज्ञान सम्पदा का विमर्श। इसमें सम्मिलित हैं-

- भारत की समग्र चिन्तन परम्परा का परिचय।
- भारतीय विद्याओं का परिज्ञान।
- हिन्दू जीवन पद्धति, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू चिन्तन का अवबोध।
- भारत में विकसित कलाओं का क्रमिक परिचय।

PO8: Persuasion of Hindu Philosophy and Culture - A specific study of the way of life, customs and traditions described in Hinduism. It includes-

• fundamentals of Hindu culture.
• tattvamimansa and gyaanmimansa of Indian philosophy.
• hindu lifestyle ethics.
• global vision of Hindu thoughts.

PO8: हिन्दू दर्शन एवं संस्कृति का अनुशीलन- हिन्दू धर्म में वर्णित जीवन पद्धति रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं का विशिष्ट अध्ययन। इसमें सम्मिलित है-

- हिन्दू संस्कृति के मूलस्त्रोत।
- भारतीय दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा।
- हिन्दू जीवन शैली आचार मीमांसा।
- हिन्दू चिन्तन की वैश्विक दृष्टि

Programme Specific Outcomes (PSOs)

At the end of this 2 years Master Degree programme in Hindu Stuides, students will able to-

द्विवर्षीय हिन्दू अध्ययन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अन्त में, छात्र-

PSO1- पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों का समीक्षात्मक अध्ययन कर हिंदू धर्म की अवधारणा का परिज्ञान प्राप्त कर सकेगा।

PSO2- ज्ञान के संश्लेषण एवं तार्किक कौशलों के आधार पर हिंदू धर्म से संबंधित परंपराओं एवं विचारधाराओं का परिचय प्राप्त कर सकेगा।

PSO3-विभिन्न विषयों के अध्ययन से प्राचीन ज्ञान एवं ऐतिहासिक प्रथाओं को समझने में सक्षम होगा।

PSO4-धर्म से संबंधित ग्रंथों की सटीक व्याख्या कर सकेगा एवं निहित तत्वों की समीक्षा कर सकेगा।

PSO5-वैदिक ग्रन्थ एवं वैदिक परम्परा में निहित एकत्व के सिद्धान्त के विषयों का प्रतिपादन कर सकेगा।

PSO6- धर्म एवं उससे संबंधित समसामयिक मुद्दों का परिज्ञान कर उनमें निहित अवधारणाओं के प्रति मूल्यांकन क्षमता में अभिवर्धन कर सकेगा।

PSO7- विविध परम्पराओं के सिद्धान्त एवं उनमें निहित प्रत्ययों का वर्णन/ व्याख्या कर सकेगा।

PSO8- धर्मनिरपेक्ष एवं आध्यात्मिक विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा।

PSO9- ब्रह्मांड, समाज एवं उसके सभी घटकों के विषय में एक व्यापक दृष्टिकोण को विकसित कर सकेगा।

PSO10- भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित हिंदू मूलभूत सिद्धांतों की अभिव्यक्ति कर सकेगा।

PSO11-हिंदू दर्शन एवं संस्कृति का अनुशीलन कर हिंदू धर्म में बताई गई विधियों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य की स्थिति स्पष्ट कर सकेगा।

PSO12- ज्ञान एवं बौद्धिक क्षमता का विकास ।

PSO13-भारतीय नीतिशास्त्र के मुख्य स्म्प्रत्ययों का प्रतिपादन कर सकेगा।

PSO14- धर्म एवं अध्यात्म के आधार पर आत्मा-आलोचनात्मक एवं आत्म चिंतनशील दृष्टिकोण का अभ्यास।

Course Outcomes
(कोर्स परिणाम)

At the end of this /2 years Master Degree programme in Hindu Studies, students will able to-

द्विवर्षीय हिन्दू अध्ययन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अन्त में, छात्र-

प्रथम सत्र

Course कोर्स	Course Outcomes कोर्स परिणाम।
कोर्स-1 **संस्कृताध्ययन के उद्देश्य एवं प्रयोजन**	CO1- संस्कृत व्याकरण का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेगा। CO2- विभक्ति एवं कारक का परिज्ञान हो सकेगा CO3- शब्द रूप एवं धातु रूप का परिचय एवं अभ्यास हो सकेगा CO4- वाच्य, प्रत्यय, अव्यय, उपसर्ग, विशेष्य-विशेषण संबंध आदि का प्रयोग कर सकेगा। CO5- संस्कृत शब्दावलियों का पाश्चात्य अवधारणाओं से विरोधाभास का विश्लेषण कर सकेगा। CO6- संस्कृत पाठ्यांशो के अध्ययन से संस्कृत भाषा के पठन एवं लेखन में दक्षता प्राप्त हो सकेगी। CO1- get a general introduction to Sanskrit grammar. CO2- known Vibhakti & Karak. CO3- introduce and practice Shavad roop & Dhatoo roop. CO4 - use Vaachya , Pratyay, avyaya, upsarga, Visheshya-visheshan relationship. CO5- Analyze the contrast of Sanskrit terminology with western concepts. CO6- get proficiency, in reading and writing of Sanskrit language by studying Sanskrit texts.
कोर्स-2 **प्रमाणसिद्धान्त**	CO1- प्रमाणसिद्धांत की उत्पत्ति, प्रयोजन एवं परिभाषा का परिज्ञान हो सकेगा। CO2- शब्दशक्ति एवं शक्तिग्रहोपाय का विश्लेषण कर अर्थ निर्धारण में समर्थ हो सकेगा। CO3- प्रमाणों का वैविध्य ज्ञात कर उनका प्रयोग कर सकेगा। CO4- प्रमाणों की परस्पर पूरकता का विमर्श कर सकेगा। CO5- समकालीन ग्रंथों के अध्ययन में प्रमाणों का प्रयोग कर सकेगा। CO1-understand the origin, purpose and definition of Pramansiddhanta. CO2- determine the meaning by analyzing the shabdashakti and shaktigrahopaya. CO3-use diversity of the praman by knowing them. CO4-discuss the mutual complementarity of the pramanas. CO5-use praman in the study of contemporary texts.
कोर्स-3 **वाद परम्परा तथा उनकी संस्थायें**	CO1- शास्त्रार्थ विधि का परिज्ञान हो सकेगा। CO2- वादपरम्परा का परिचय एवं उसके भेदों का विवेचन कर सकेगा। CO3- सूत्र, वृत्ति, टीका, टिप्पणी की परिभाषा से अवगत हो सकेगा । CO4- अर्थ निर्धारण की प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त कर अर्थ निर्धारण में सक्षम हो सकेगा। CO5-विभिन्न ज्ञान परम्पराओं में तंत्रयुक्ति के प्रयोग का विश्लेषण कर सकेगा। CO6-नैयायिक प्रक्रिया द्वारा समस्या से निर्णय तक की प्रक्रिया का आकलन कर सकेगा।

	CO1 - understand shastraarth vidhi. CO2- introduce the Vaadparmpra and interpret its differences. CO3- know the defination of Sutra, Vritti, teeka & tippani. CO4- determine the meaning of Pravidhi's by knowing them. CO5 - analyze the use of Tantrayukti in different traditions. CO6 -assess the process from problem to decision by judgmental process.
कोर्स-4 **तत्वविमर्श**	CO1- हिन्दू वाद के मूल स्त्रोत एवं इतिह्य परिज्ञात हो सकेगा। CO2- हिन्दू शब्द की उत्पत्ति एवं भौगोलिक विवेचन करने में समर्थ हो सकेगा। CO3- पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों की दृष्टि में हिंदू शब्द की समीक्षा कर सकेगा । CO4- अष्टादश विद्याओं का परिचय एवं विश्लेषण कर सकेगा। CO5- स्त्री विषयक विभिन्न मतों की समीक्षा कर सकेगा। CO6- भारतीय परंपरा में वर्णित पदार्थ तत्वों की विवेचना कर सकेगा। CO7- आत्म परिचय के उपनिषद संबंधी सिद्धांत की समीक्षा कर सकेगा। CO1- known the original source and history of the Hinduvaad. CO2- explain the origin and geographical origin of the word Hindu. CO3 - review the word Hindu in the terms of Western and Indian scholars. CO4- introduce and analyze Ashtadash Vidyas. CO5- review various opinions on Streevimarsha. CO6- analyse the tatva discribed in Indian tradition discuss the elements. CO7-review the Upanishad theory of self-introduction.
कोर्स-5 **वेदों का परिचय**	CO1- वैदिक वांग्मय का परिज्ञान कर सकेगा। CO2- मन्त्र उच्चारण एवं अर्थ संरक्षण के नियम का अनुपालन कर सकेगा। CO3- वेदांगों का परिचय प्राप्त कर सकेगा। CO4- वैदिक परंपरा के विभिन्न सिद्धांतों का परिचय एवं विवेचन कर सकेगा। CO5- वर्ण, जाति एवं कास्ट की तुलना कर सकेगा। CO1- understand Vedic Vaangmaya. CO2- learn Mantra pronunciation & follow rules arthsanrakshan. CO3- get the introduction of Vedangas. CO4- introduce and discuss various principles of Vedic tradition. CO5 -compare varna, jaati and caste.

द्वितीय सत्र

Course कोर्स	Course Outcomes कोर्स परिणाम।
कोर्स-1 **धर्म और कर्म विमर्श**	CO_1- धर्म की शास्त्रीय परिभाषा का परिचय प्राप्त होगा। CO2- वैदिक ग्रन्थों, जैन, बौद्ध एवं सिख परम्परा में धर्म की व्याख्या एवं विश्लेषण कर सकेगा। CO3- विश्वास एवं उपासना में धर्म की प्रधानता को परिभाषित कर सकेगा CO4- धर्म, रिलीजन, पथ और महजब के मध्य अंतर स्पष्ट कर सकेगा CO5- कर्म की परिभाषा समझकर सकाम एवं निष्काम कर्म के विवेचना कर सकेगा। CO1- understhand the classical definition of religion. CO2- explain and analyze religion in Vedic texts, Jain, Buddhist and Sikh traditions. CO3- define the primacy of religion in faith and worship. CO4- differentiate between dhrama, religion, path and Mahjab CO5- interpret skaam & nishkam karma by knowing definition of karma.
कोर्स-2 **वैदिक परम्परा के सिद्धान्त**	CO_1- वैदिक परंपरा के आधारभूत तत्वों का परिचय प्राप्त कर सकेगा। CO2- निगम और आगम के मध्य अंत:संबंध का मूल्यांकन कर सकेगा। CO3- यज्ञ विषयक समस्त पक्षों का विश्लेषण कर सकेगा। CO4- यज्ञों के परिणाम की विवेचना कर सकेगा। CO5- देवतत्व की अवधारणा की तर्क सम्मत व्याख्या कर सकेगा। CO1- get an introduction to the basic elements of the Vedic tradition. CO2 - Evaluate the interrelationship between the Aagam &Nigam CO3- analyze all the aspects related to Yagya. CO4- discuss the result of Yagyas. CO5- explain the logical-concept of Devtatva.
कोर्स-3 **वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द)**	CO_1- शिक्षा ग्रंथों का परिचय प्राप्त कर सकेगा CO2- वर्ण उच्चारण में शिक्षा के नियमों का प्रयोग कर सकेगा CO3- व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन एवं परंपरा जान सकेगा CO4- प्रकृति-प्रत्यय का विवेचन कर सकेगा। CO5-निरुक्त शास्त्र का परिचय एवं उपयोगिता से अवगत हो सकेगा। CO6-छंद शास्त्र का ज्ञान कर उसकी तर्क सम्मत व्याख्या कर सकेगा CO1- to get an introduction to Shiksha texts. CO2 - use the rules of Shiksha in Varn pronunciation CO3- know the purpose and tradition of Vyakarna Shastra. CO4- explain the Prakrti-Pratayya. CO5- known Nirukta Shastra and utility of it. CO6 - known chanda shasra and explain it logically
कोर्स-4 **प्राकृत भाषा एवं जैन दर्शन**	CO_1- प्राकृत भाषा की उत्पत्ति एवं परिभाषा से परिचित हो सकेगा। CO2- प्राकृत व्याकरण का परिचय हो सकेगा। CO3- जैन तीर्थंकरों के ऐतिह्य तथा उनके योगदान की विवेचना कर सकेगा। CO4- जैन तत्वमीमांसा की समीक्षा कर सकेगा। CO5-सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र तथा सम्यक् ज्ञान की तर्कसंगत व्याख्या कर सकेगा। CO1- know the origin and definition of Prakrit language CO2- know the Prakrit grammar.

	CO3- discuss the Jain Tirthankara's history and contribution of them. CO4- review Jain Tatvamimansa CO5 - explain Samyak Darshan, Samyak Chritra &Samyak Gyan.
कोर्स-5 **पालि भाषा एवं बौद्ध दर्शन**	CO1- पालि व्याकरण का परिज्ञान कर सकेगा CO2- बौद्ध सिद्धांतों के परिभाषिक पदों का परिचय प्राप्त कर सकेगा । CO3- बौद्ध की मौलिक शिक्षाओं की तार्किक एवं व्यावहारिक व्याख्या कर सकेगा। CO4- बौद्ध के चारों संप्रदायों के सिद्धांतों की विवेचना करने में समर्थ होगा। CO5- बौद्ध दर्शन के विचारों का विश्लेषण कर सकेगा। CO1- understand Pali grammar CO2 - Get an introduction to the definitional terms of Buddhist principles. CO3- able to give a logical and practical explanation of the fundamental teachings of Buddhism. CO4-able to discuss the principles of the four communities of Buddhism. CO5- able to analyze the ideas of Buddhist philosophy.

तृतीय सत्र

Course कोर्स	Course Outcomes कोर्स परिणाम।
कोर्स-1 **पुर्नजन्म बन्धन मोक्षविमर्श**	CO_1- पुनर्जन्म के सिद्धांत को समझ सकेगा। CO2- बन्धन एवं मोक्ष की अवधारणा स्पष्ट कर सकेगा। CO3- बन्धन के मूल कारण का मूल्यांकन कर सकेगा। CO4- मोक्ष के स्वरूप का विश्लेषण कर सकेगा। CO5- मोक्ष प्राप्ति के उपाय की विवेचना कर सकेगा। CO6-मोक्ष के विभिन्न मार्गों की तर्क सम्मत व्याख्या कर सकेगा। CO1- able to understand the principle of rebirth. CO2- explain the concept of bandhan and moksha. CO3- Evaluate the causes of bandhan. CO4- analyze the nature of moksha. CO5- discuss the ways to attain moksha. CO6- explain the various paths to moksha.
कोर्स-2 **रामायण**	CO_1- रामायण की कथावस्तु एवं महिमा का परिज्ञान कर सकेगा। CO2- रामकथा के वैदिक आधार का विश्लेषण कर सकेगा। CO3- भारत तथा विदेशों में चर्चित रामकथा की तुलनात्मक विवेचना कर सकेगा। CO4- रामायण की लोकप्रियता एवं प्रासंगिकता की विवेचना कर सकेगा। CO5- विभिन्न रामायण ग्रंथों की तुलना कर सकेगा। CO6-रामायण में मानव तथा प्रकृति संबंध का मूल्यांकन कर सकेगा। CO7-समाज में ऋषियों की भूमिकाओं का विवेचन कर सकेगा। CO8- रामायण में स्त्रियों का विमर्श कर सकेगा। CO1- understand the story and glory of Ramayana. CO2- analyze the Ramkatha on Vedic basis. CO3- to do comparative analysis of Ram Katha in India and abroad. CO4- discuss the popularity and relevance of Ramayana. CO5- compare different Ramayana texts. CO6- evaluate the human and nature relationship in Ramayana. CO7 -discuss the roles of sages in society. CO8-do in feminism Ramayana.
कोर्स-3 **भारतीय नीतिशास्त्र**	CO_1- आचार शास्त्र के इतिहास और स्वरूप को समझ सकेगा। CO2- नैतिक चेतना का विकास कर सकेगा। CO3- नैतिक शिक्षा के विविधरूपों का परिज्ञान कर सकेगा। CO4- ऋण की अवधारणा स्पष्ट हो सकेगी। CO5-पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म स्वातंत्र्य , संकल्प स्वातंत्र्य एवं कर्तव्यवाद की विवेचना कर सकेगा। CO1- understand the history and nature of ethics. CO2- develop moral consciousness. CO3- understand the various forms of moral education. CO4- clear the concept of Rin. CO5-explain Purushartha Chaturtaya, dharma swatantarya, sankalap swatantarya & kartvyavaad.
कोर्स-4 **नाट्य**	CO_1- भरतमुनि के नाट्य शास्त्र का परिचय एवं महत्व ज्ञात हो सकेगा । CO2- नाट्य का उद्भव एवं विकास का परिज्ञान कर सकेगा

	CO3- करण, अंगहार, रस, भाव, अभिनय आदि लोकोपयोगी विषयों की विवेचन कर सकेगा। CO4- दशरूपक और अठारह उपरूपकों की आलोचना कर सकेगा। CO5-संस्कृत नाटक का संक्षिप्त इतिवृत तक प्रस्तुत कर सकेगा। CO6-भारतीय लोक रंगमंच की परंपरा को उपस्थापित कर सकेगा। O1- known the introduction and importance of the Natya Shastra of Bharatmuni . CO2 - understand the origin and development of Natya . CO3- discuss important subjects in social scenario like:Karan, Angahar, Rasa, Bhava, Abhinaya etc CO4 - criticize the dashroopak and eighteen uproopak. CO5 - present iitvrit of Sanskrit drama. CO6 - establish the tradition of Indian folk theatre.
कोर्स-5 **पुराणपरिचय**	CO_1- पुराणों का परिचय एवं उसकी कालस्थिति का परिज्ञान हो सकेगा CO2- पुराण लक्षण एवं पौराणिक संस्कृति की विवेचना कर सकेगा CO3- आख्यान एवं उपाख्यान का अंतर स्पष्ट हो सकेगा CO4- पौराणिक ऋषियों एवं ऋषिकाओं के जीवन से अवगत हो सकेगा CO5- पुराणों में वर्णित पुरुष पात्रों एवं स्त्री पात्रों के चरित्र का विश्लेषण कर सकेगा CO6-अरण्य,पुरियाँ ,तीर्थस्थल, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ एवं सप्तद्वीप के वैशिष्ट की विवेचना कर सकेगा CO1- understood introduction of Puranas and its time status. CO2- explain characteristics of purana's and pauranik culture. CO3- clear difference between Aakhyan and upakhyan. CO4- know the life of pauranik sages and sages CO5- analyze the character of male and female described in Puranas. CO6- explain significance of Aranya, Puri, teertha sthala, Dwadash Jyotirlinga, Shaktipeeth and Saptadvipa.

चतुर्थ सत्र

Course कोर्स	Course Outcomes कोर्स परिणाम।
कोर्स-1 **महाभारत**	CO_1- महाभारत की कथावस्तु एवं महत्व महत्व का परिज्ञान हो सकेगा। CO2- महाभारत के रचना काल की तार्किक समीक्षा कर सकेगा। CO3- विक्रम संवत की विवेचना कर सकेगा। CO4- धर्म के 10 लक्षणों का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेगा। CO5- साहित्य कला और संस्कृति के उपजीव्य के रूप में महाभारत की समीक्षा कर सकेगा । CO6-श्रीमद्भगवद्गीता एवं विदुर नीति का ज्ञान एवं विश्लेषण कर सकेगा। CO1- understand the story and importance of Mahabharata . CO2- logically review the period of Mahabharata. CO3- discuss the Vikram Samvat. CO4- present examples of 10 characteristics of Dharma. CO5- review the Mahabharata as Upjeevya of art and culture. CO6- Know and analys Shrimad Bhagavad Gita and Vidur Niti.
कोर्स-2 **विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि**	CO_1- पारंपरिक विधियों का परिचय हो सकेगा। CO2- मार्क्सवाद एवं समीक्षावादी चिंतन से अवगत हो सकेगा। CO3- संरचनावाद के संबंध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो सकेगा। CO4- भारतीय ज्ञान तन्त्र की आलोचना कर सकेगा। CO5- भारतीय प्राविधियों का उपयोग कर समकालीन पाठों का विश्लेषण कर सकेगा। CO1- introduce conventional methods. CO2 -understand Marxism and critical thinking. CO3-develope scientific approach regarding structuralism. CO4- criticize the Indian knowledge system. CO5 - Analyze contemporary lessons using Indian techniques.
कोर्स-3 **भारतीय स्थापत्य**	CO_1- भारतीय स्थापत्य के उद्गम और विकास का परिज्ञान हो सकेगा। CO2- देवालय एवं देव प्रतिमा का आगम की दृष्टि से विश्लेषण कर सकेगा। CO3- मंदिर स्थापत्य के उद्गम और विकास के शास्त्रीय स्वरुप से अवगत हो सकेगा। CO4- गुप्तकालीन मंदिरों के वैशिष्ट्य को रेखांकित कर सकेगा। CO5- उत्तर भारत के मंदिरों एवं दक्षिण भारत के मंदिरों की विशेषताओं का विवेचन कर सकेगा। CO6 - आश्रम, विद्यास्थान, धर्मशास्त्र एवं आवास की शास्त्रीय स्वरुप को स्पष्ट कर सकेगा। CO1- understand the origin and development of Indian architecture d. CO2 - analyze the temple and the idol of God in term of Agam. CO3- get acquainted with the classical form of origin and development of temple architecture. CO4- underline the specialty of the Gupta period temples. CO5- discuss the characteristics of the temples of North India and the temples of South India. CO6 - explain the classical nature of Ashram, Vidyasthan, Dharmashastra and residence..
कोर्स-4 **पाणिनीय एवं पाश्चात्य भाषाविज्ञान**	CO_1- पाणिनीय भाषाविज्ञान एवं पाणिनि से पूर्व व्याकरण का सम्यक परिज्ञान कर सकेगा।

	CO2 - पाणिनीय भाषाविज्ञान का अनुप्रयोग कर सकेगा। CO3- वृति एवं शाब्दबोध की अवधारणा स्पष्ट होगी। CO4- शब्दबोध के सिद्धान्त में अपेक्षित आकांक्षा, योग्यता सन्निधि का प्रयोग वाक्यसंरचना में कर सकेगा। CO5-पाश्चात्य भाषाविज्ञान एवं पाणिनीय भाषाविज्ञान की तुलना कर सकेगा। CO1- understand linguistics and grammar before Panini. CO2 - apply Paninian linguistics. CO3- clear concept of variti and Shabdabodha. CO4- use aakanksha, abilityYogyta & sannidhi expected in sentences. CO5- compare Western Linguistics and Panini Linguistics.
कोर्स-5 **भारतीय कला**	CO1-भारतीय चिन्तन कला के महत्त्व का परिज्ञान हो सकेगा। CO2 -कला के अध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा। CO3-सौन्दर्य की भारतीय अवधारणा का अवबोध होगा। CO4-गायन,वादन ,नर्तन आदि कालाओं का परिज्ञान एवं अनुप्रयोग कर सकेगा। CO5-कला का आन्तरिक स्वरूप स्पष्ट होगा तथा वर्तमान कला के क्षेत्र में उसका समायोजन कर सकेगा। CO1- understand the importance of Indian thought art. CO2- clear the concept of adhyatmik, adhidaivik and adhibhautik forms. CO3 - understand the concept of Indian beauty. CO4 - understand and apply Singing, playing, dancing etc. CO5 - clear the internal nature of art and adjust it in the field of current art.